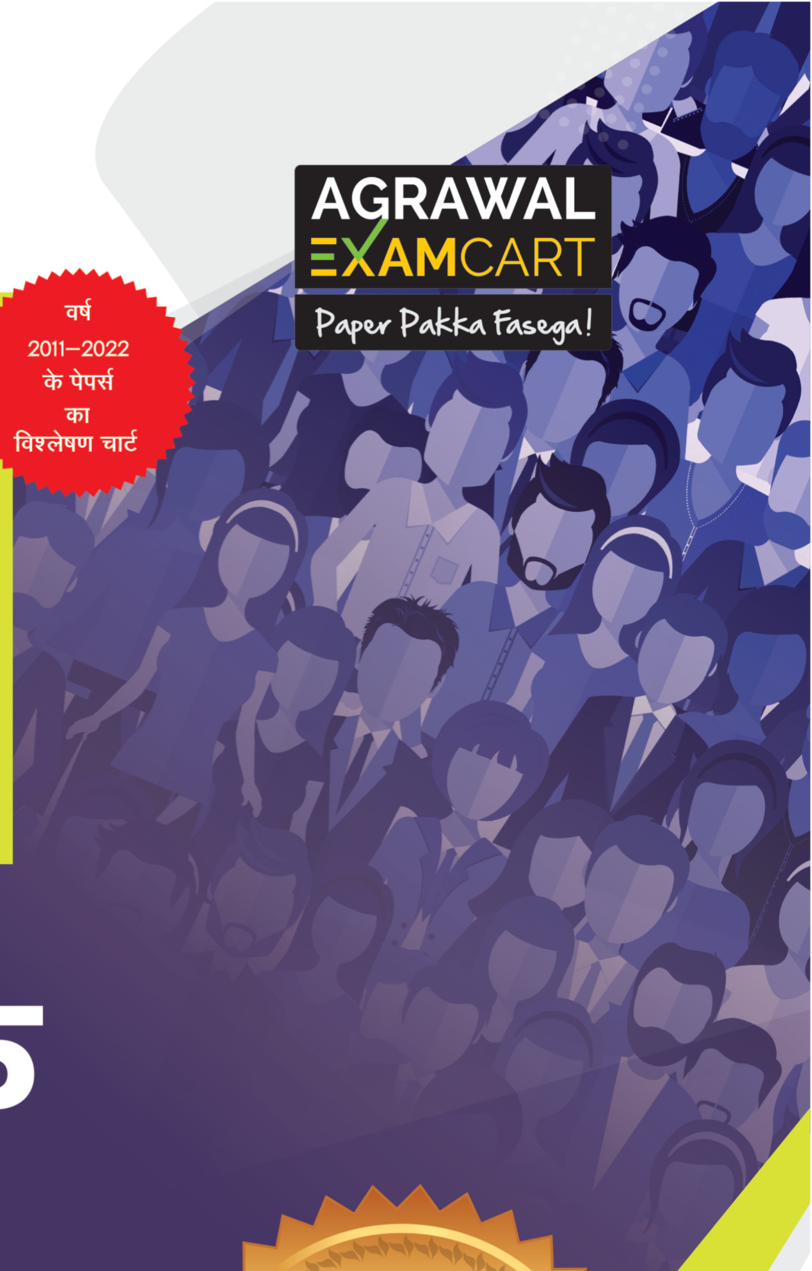

AGRAWAL EXAMCART

Paper Pakka Fasega!

वर्ष 2011–2022 के पेपर्स का विश्लेषण चार्ट

CTET 2022

केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

NCERT पैटर्न पर आधारित

सामाजिक अध्ययन

PAPER-II (कक्षा 6 से 8)

NEW 4 in1 Textbook

Best Text book!

इस पुस्तक की थ्योरी CTET 2021 व 2022 के पाठ्यक्रम एवं विगत् वर्षों में पूछे गये प्रश्नों पर आधारित है।

इस पुस्तक का गहन अध्ययन करने से आप CTET सामाजिक अध्ययन के प्रश्नों को आसानी से हल कर सकते हैं।

- सम्पूर्ण थ्योरी CTET पाठ्यक्रम एवं विगत वर्षों के प्रश्नों पर आधारित
- वर्ष 2011 से 2021 तक के सभी प्रश्न अध्यायवार एवं व्याख्यात्मक हल सहित
- अभ्यास प्रश्नों का अध्यायवार समावेश
- 23 दिस. 2021, 3 जन. 2022 और 7 जन. 2022 के CTET पेपर्स के सामाजिक अध्ययन विषय के प्रश्नों का हल सहित समावेश।

Code	Price	Pages
CB916	₹ 299	382

विषय सूची

Student's Corner — पृष्ठ संख्या

- ⊙ Agrawal Examcart Help Centre — viii
- ⊙ परीक्षा की तैयारी करने की Best Strategy — ix
- ⊙ Current Affairs! की 100% सटीक तैयारी कैसे करें ? — x
- ⊙ केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा पाठ्यक्रम — xi
- ⊙ C-TET (6-8) के पिछले वर्षों के हल प्रश्न–पत्रों का विश्लेषण चार्ट — xii

सामाजिक अध्ययन

1. इतिहास के स्रोत (कब, कहाँ और कैसे?) — **1-13**
- पुरातात्विक स्रोत (Archaeological Sources)
- साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)
- विदेशी यात्रियों के विवरण (Details of Foreign Travellers)

2. मानव का विकास (प्रारम्भिक समाज, प्रथम कृषक तथा चरवाहे) — **14-21**
- पाषाण काल (प्रागैतिहासिक काल) (Stone Age Prehistoric Age)
- ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Age)

3. सिन्धु घाटी एवं वैदिक सभ्यता (प्रारम्भिक नगर) — **22-34**
- सिन्धु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization)
- हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल (Main Sites of Harappa Civilization)
- वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति (Vedic Civilization & Culture)

4. महाजनपद काल (प्रारम्भिक राज्य) — **35-38**
- छठी शताब्दी ई. पू. का भारत तथा महाजनपद काल (Indian 6th Century BC & Mahajanpada Age)

5. बौद्ध तथा जैन धर्म (नए विचार) — **39-46**
- धार्मिक आन्दोलन (Religious Movements)
- छठीं शताब्दी ई. पू. के अन्य धार्मिक सम्प्रदाय (Other Religious Sects of 6th Century BC)

6. मौर्य काल (प्रथम साम्राज्य तथा दूरस्थ भूमि से सम्पर्क, राजनैतिक विकास, संस्कृति एवं विज्ञान) — **47-57**
- मगध का उत्थान (Rise of Magadh)
- विदेशी आक्रमण तथा सिकन्दर (Foreign Invasions & Sikandar)
- मौर्य साम्राज्य (322-184 ई.पू.) (Mauryan Empire)

7. मौर्योत्तर काल (नए सम्राट एवं साम्राज्य) — **58-71**
- मौर्योत्तर काल (Later Maurya Age)
- भारत के यवन राज्य (Greek States in India)
- संगम युग (Sangam Age)
- गुप्त वंश (240-480 ई.) (Gupta Dynasty)
- गुप्तोत्तर काल (Later Gupta Age)
- राजपूत काल (800-1200 ई.) (Rajput Age)

- चोल साम्राज्य (नवीं से बारहवीं सदी तक) [Chola Empire (9th to 12th Century AD)]
- कुछ अन्य छोटे राजवंश (Some Other Dynasties)

8. भारत पर मुस्लिम आक्रमण तथा दिल्ली सल्तनत (दिल्ली के सुल्तान) **72-90**
- मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत (Sources of Medieval India)
- भारत पर अरब एवं तुर्क आक्रमण (Arab & Turkish Invasion on India)
- दिल्ली सल्तनत [1206-1526 ई.] (Delhi Sultanate)
- प्रान्तीय राज्य (Provincial States)
- विजय नगर साम्राज्य (Vijay Nagar Empire)
- बहमनी राज्य (Bahmani Empire)

9. मुगल वंश एवं स्वयात्त राज्यों का उदय (साम्राज्य का उदय) **91-112**
- मुगल साम्राज्य मुगलकालीन इतिहास के स्रोत (Mughal Age Sources of History)
- मुगल वंश के शासक (Mughal Dynasty)
- मुगल प्रशासन (Mughal Administration)
- मराठों का उत्कर्ष (Rise of Marathas)
- ईस्ट इंडिया कम्पनी और बंगाल के नवाब (East India Company & Nawab of Bengal)
- अन्य प्रान्त (Other States)

10. मध्यकालीन धार्मिक आन्दोलन (सामाजिक परिवर्तन एवं क्षेत्रीय संस्कृति) **113-120**
- सूफी आन्दोलन (Sufi Movement)
- भक्ति आन्दोलन (Bhakti Movement)
- सिख धर्म का इतिहास (History of Sikhism)

11. भारत में यूरोपियनों का आगमन (कम्पनी शासन की स्थापना एवं ग्रामीण जीवन तथा समाज) **121-129**
- यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन (Advent of Europeans in India)
- ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रशासनिक संगठन (Admin. Composition of the East India Company)
- रेलवे विकास (Development of Railways)

12. 1857 का स्वतंत्रता संग्राम तथा अन्य विद्रोह (उपनिवेशवाद, जनजातीय समाज) **130-142**
- 1857 का विद्रोह (Revolt of 1857)
- भारत में जनजातीय आंदोलन (Tribal Movement in India)
- प्रमुख किसान आंदोलन (Major Peasant Movement)

13. समाज सुधार आन्दोलन (महिला और सुधार, जाति व्यवस्था को चुनौती) **143-152**
- सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण (Social & Religious Renaissance)
- महिलाएँ एवं सुधार (Women and Reforms)
- ब्रिटिश काल में भारत में शिक्षा का विकास (Educational Development in British Period)
- भारत में समाचार पत्रों का विकास (Development of News Papers in India)

14. राष्ट्रवादी आन्दोलन तथा स्वतन्त्रता के बाद भारत **153-176**
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरण (Various Stages of Indian National Movement)
- भारत के गवर्नर-जनरल (Governor-General of India)
- भारत के वायसराय (Viceroy's of India)
- स्वतन्त्रता आन्दोलन के महत्वपूर्ण तथ्य (Important Facts of Freedom Movement)
- आधुनिक भारत के महत्त्वपूर्ण बिन्दु (Important Points of Modern India)
- स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत

- भारत का गणतान्त्रिक राज्य बनाना (India to be a Republic State)
- प्रारूप समिति का गठन (Compositon of Drafting Committee)
- भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् चुनौतियाँ (Challenges After the Indian Independence)

15. ब्रह्माण्ड, सौरमण्डल तथा मानचित्रण **177-190**
- ब्रह्माण्ड (Universe)
- सौरमण्डल (Solar System)
- ग्लोब (Globe)
- पृथ्वी की गति, काल्पनिक रेखाएँ एवं समय का निर्धारण (Movements of Earth, Imaginary Lines and Determination of Time)

16. पृथ्वी की संरचना तथा उसके परिमंडल **191-231**
- स्थलमण्डल (Lithosphere)
- जलमण्डल (Hydrosphere)
- वायुमण्डल (Atmosphere)
- महाद्वीप (Continents)
- आर्थिक भूगोल (Economic Geography)
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक भूगोल (Social & Cultural Geography)

17. पर्यावरण एवं संसाधन **232-253**
- पर्यावरण (Environment)
- प्राकृतिक संसाधन : अर्थ एवं परिभाषा (Natural Resources : Meaning and Definition)
- ऊर्जा व उसके वैकल्पिक स्रोत (Energy & Its Alternative Sources)
- प्राकृतिक संतुलन (Natural Balance)
- बढ़ती जनसंख्या का पर्यावरण पर प्रभाव (Effect of Increasing Population on Environment)
- प्रदूषण (Pollution)
- अपशिष्ट प्रबंधन (Waste Management)
- महत्वपूर्ण पर्यावरणविद् (Important Environmentalists)
- भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले पर्यावरण पुरस्कार (Environment Awards Conferred by Government of India)
- विश्व पर्यावरण दिवस (World Environment Day)
- पर्यावरण कैलेण्डर (Environment Calender)
- वन संरक्षण (Forest Preservation)
- प्राकृतिक आपदा प्रबन्धन (Natural Disaster Management)

18. खनिज और शक्ति संसाधन **254-260**
- खनिज संसाधन (Mineral Resources)
- ऊर्जा संसाधन (Energy Resources)

19. कृषि एवं उद्योग **261-272**
- भारत में कृषि (Indian Agriculture)
- कृषि के विशिष्ट प्रकार (Specific Type of Agriculture)
- भारत में उद्योग (Industries in India)

20. मानवीय पर्यावरण : बस्तियाँ, परिवहन, संचार एवं प्रदेश जीवन **273-279**
- बस्तियाँ (Settlement)

- परिवहन (Transportation)
- संचार (Communication)

21. हमारा देश भारत 280-307
- भारत का सामान्य परिचय (General Introduction of India)
- भारत का भौतिक विभाजन (Physical Division of India)
- भारत में अपवाह तन्त्र (The Drainage System in India)
- भारत की जलवायु (Climate of India)
- प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation)
- भारत की मृदा (Soil of India)
- भारत की खनिज सम्पदा (Mineral Wealth of India)
- ऊर्जा संसाधन (Energy Resources)
- भारत में उद्योग (Industries in India)
- परिवहन (Transportation)
- भारत की प्रमुख जनजातियाँ (Major Tribes of India)
- भारतीय राज्य और लोकनृत्य (Indian State and Folk Dance)
- भारत में प्रसिद्ध स्थलों की सूची (List of Famous Places in India)

22. विविधता 308-311
- विविधता का सामान्य अर्थ (General Meaning of Diversity)
- भौगोलिक विविधता (Geographical Diversity)
- विविधता व एकता एवं भेदभाव सम्बन्धी तथ्य (Diversity and Unity Discrimination)

23. सरकार 312-314
- सरकार का अर्थ (Meaning of Government)
- सरकार के कार्य (Works of Government)
- सरकार के विभिन्न प्रकार व रूप (Different Types and Forms of Government)
- लोकतंत्र के मूल तत्व (Fundamental Elements of Democracy)

24. हमारा समाज तथा आजीविकाएँ 315-316
- आजीविका (Livelihood)
- ग्रामीण जीविका निर्वहन (Rural Livelihood)
- शहरी जीविका निर्वहन (Urban Livelihood)

25. लिंग बोध 317-320
- लिंग भेद का अर्थ (Meaning of Gender Differences)
- बालक–बालिका में लैंगिक भेद–भाव (Gender Discrimination between Boys and Girls)
- महिला कार्य क्षेत्र व समानता (Women's Work Area and Equality)
- महिला कार्यक्षेत्र व भेदभाव (Women's Work force and Discrimination)
- महिला सशक्तीकरण व महिला आन्दोलन (Women Empowerment and Women's Movement)
- महिला सशक्तीकरण सम्बन्धी कुछ तथ्य (Some Fact about women Empowerment)

26. संचार माध्यम, विज्ञापन व बाजार 321-324
- संचार के माध्यम व तकनीक (Media and Techniques of Communication)
- विज्ञापन का अर्थ (Meaning of Advertisement)

27. भारतीय संविधान और धर्म निरपेक्ष **325-358**

- भारत का संवैधानिक विकास (Constitutional Development of India)
- भारतीय संविधान के प्रमुख स्रोत (Major Sources of Indian Counstitution)
- संविधान की उद्देशिका अथवा प्रस्तावना (Preamble of Constitution)
- संविधान सभा एवं भारतीय संविधान (Constituent Assembly & Indian Constitution)
- संघ एवं राज्य क्षेत्र (Union and its Territory)
- नागरिकता (Citizenship)
- मौलिक अधिकार (Fundamental Rights)
- राज्य के नीति निदेशक तत्व (Directive Principles of State Policy)
- मौलिक कर्त्तव्य (Fundamental Duties)
- संघ की कार्यपालिका (Union Executive)
- संसद (Parliament)
- न्यायपालिका (Judiciary)
- राज्य की कार्यपालिका (State Executive)
- राज्य का विधानमंडल (Legislature of the State)
- पंचायती राज एवं नगरपालिकाएँ (Panchayati Raj and Municipalities)
- संघ और राज्यों मध्य सम्बन्ध (Relation Between the Union and the State)
- योजना आयोग (Planning Commission)
- राष्ट्रीय विकास परिषद् (National Development Council)
- नीति आयोग (NITI Aayog)
- निर्वाचन आयोग (Election Commission)
- राजभाषा (Official Language)
- लोक सेवा आयोग (Public Service Commission)
- राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग (National Commission for Scheduled Castes and Scheduled Tribes—NCSC & ST)
- राष्ट्रीय आपात (National Emergency)
- जिला प्रशासन (District Administartion)
- प्रमुख संविधान संशोधन (Important Constitutional Amendment)
- धर्मनिरपेक्षता या पंथनिरपेक्षता (Secularism)

28. सामाजिक न्याय, आर्थिक क्षेत्र एवं सरकार **359-364**

- हाशियाकरण और आदिवासी जीवन (Marginalization and Tribal life)
- हाशियाकरण और अल्पसंख्यक (Marginalization and Minorities)
- हाशियाकरण और समाधान (Marginalization and Reconiciliation)
- जनसुविधाएँ और सरकार (Public Facilities and Government)
- कानून व सामाजिक न्याय (Law and Social Justice)

सॉल्व्ड पेपर्स

☞ केन्द्रीय शिक्षक पात्रता (कक्षा 6 से 8) परीक्षा, 2022 हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 07-01-2022 **1-8**
☞ केन्द्रीय शिक्षक पात्रता (कक्षा 6 से 8) परीक्षा, 2022 हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 03-01-2022 **9-17**
☞ केन्द्रीय शिक्षक पात्रता (कक्षा 6 से 8) परीक्षा, 2022 हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 23-12-2021 **18-25**

अध्याय

1

इतिहास के स्रोत (कब, कहाँ और कैसे?)

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। समयानुसार भारत देश अनेक नामों से जाना जाता रहा है। यूनानियों ने भारत को इंडिया कहा तो अरब, ईरानियों ने हिन्दुस्तान। मत्स्यपुराण में भारत के 9 भाग बताए गए हैं—इन्द्रद्वीप, कसेरु, ताम्रपर्णी, त्रआंस्तिमा नागद्वीप, सौम्य, गन्धर्व, वारुष तथा सागर।

प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए शुद्ध ऐतिहासिक सामग्री अन्य देशों की अपेक्षा बहुत कम उपलब्ध है। भारत में यूनान के हिरोडोटस या रोम के लिवी जैसे इतिहास–लेखक नहीं हुए, इसीलिए कुछ पाश्चात्य विद्वानों की यह धारणा बन गई थी कि भारतीयों को इतिहास की ठीक संकल्पना ही नहीं थी। ऐसा समझना भारी भूल है। वस्तु स्थिति यह है कि प्राचीन भारतीयों की इतिहास की संकल्पना आधुनिक इतिहासकारों की संकल्पना से पूर्णतया भिन्न थी। आजकल का इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं में कार्य–कारण संबंध स्थापित करने का प्रयत्न करता है, किंतु प्राचीन इतिहासकार केवल उन घटनाओं का वर्णन करता था जिनसे जनसाधारण को कुछ शिक्षा मिल सके। महाभारत में इतिहास की जो परिभाषा दी है उससे भारतीयों की इतिहासविषयक संकल्पना पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस ग्रंथ के अनुसार ऐसी प्राचीन रुचिकर कथा जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की शिक्षा मिल सके 'इतिहास' कहलाती है। प्राचीन काल में भारतवासी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थों को जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक समझते थे। इन पुरुषार्थों को करने की प्रेरणा देने में इतिहास भी एक साधन था, इसलिए प्राचीन भारतीय इतिहासकार उन घटनाओं को कोई महत्व नहीं देते थे जिससे इन चारों पुरुषार्थों की शिक्षा न मिल सके। इसीलिए प्राचीन भारत का इतिहास राजनीतिक कम और सांस्कृतिक अधिक है। भारतीय समाज के निर्माण में धर्म का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है, किंतु धर्म के अतिरिक्त अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारण थे, जिन्होंने भारत में अनेक आंदोलनों, संस्थाओं और विचारधाराओं को जन्म दिया। भारतीय इतिहास का यथार्थ स्वरूप जानने के लिए इन सबका अध्ययन आवश्यक है।

आधुनिक इतिहासकार काल विशेष से संबंध रखने वाली साहित्यिक तथा पुरातात्विक सभी सामग्री का उपयोग करके सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। साहित्यिक स्रोतों का उपयोग करते समय वह उस विचारधारा का ध्यान रखता है जिससे प्रेरित होकर लेखक ने अपने ग्रंथ की रचना की थी। उदाहरण के लिए **आर्य–मंजु–श्री–मूल–कल्प** के लेखक का, अपना ग्रंथ लिखते समय, मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म का इतिहास लिखना था। इसलिए उसने बौद्ध धर्म के संरक्षक शासकों का गुणगान किया और अन्य शासकों की निंदा की। इतिहास लिखते समय वह यथासंभव अपने को पूर्वाग्रहों से मुक्त रखने का प्रयत्न करता है। सच्चा इतिहासकार अतीत का वर्णन करते समय उस वर्णन पर आधुनिक संकल्पनाओं को थोपने का प्रयत्न नहीं करता। आधुनिक इतिहासकार अतीत की विचारधारा का ध्यान रखकर अपने मन में उस काल का परिवेश तैयार करता है और उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर उस परिवेश के अनुरूप तत्कालीन समाज का चित्र प्रस्तुत करता है। निपुण इतिहासकार को ऐसा सही चित्र प्रस्तुत करने के लिए सदैव बहुत सतर्क रहना पड़ता है जिससे उसकी व्यक्तिगत विचारधारा से वह चित्र दूषित न हो जाए।

भारतीय इतिहास के लिखित साक्ष्यों के आधार पर तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

- **प्रागैतिहास (Prehistoric)**

  मानव इतिहास का वह कालखण्ड जिसके कोई लिखित साक्ष्य प्राप्त नहीं होते, प्रागैतिहास कहा जा सकता है। जैसे—पाषाण काल।

- **आद्य इतिहास (Early Historic)**

  मानव इतिहास का वह कालखण्ड जिसके लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध हैं, किन्तु अभी तक उन्हें पढ़ा नहीं जा सका है। आद्य इतिहास कहलाता है। जैसे—सिंधु घाटी सभ्यता।

- **इतिहास (History)**

  मानव इतिहास का वह कालखण्ड जिसके लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं और उस सामग्री को पढ़ने में भी सफलता प्राप्त हुई है, इतिहास कहलाता है। जैसे—वैदिक सभ्यता तथा उसके बाद से आगे तक।

  ध्यातव्य है कि अनेक इतिहासकार वैदिक सभ्यता को आद्य इतिहास में वर्गीकृत करते हैं, किन्तु इस काल के साक्ष्य के वैदिक साहित्य के साथ ही 1400 ई. पू. का कोई अभिलेख (एशिया माइनर) प्राप्त होता है। जिसमें इन्द्र, वरुण, मित्र तथा नासत्य आदि वैदिक देवताओं का उल्लेख किया गया है। तब इस स्थिति में यह मान्यता तर्कसंगत नहीं रह जाती कि वैदिक सभ्यता आद्य ऐतिहासिक है।

भारतीय इतिहास का अध्ययन करने के लिए प्राप्त स्रोतों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. पुरातात्विक स्रोत
2. साहित्यिक स्रोत
3. विदेशी यात्रियों के विवरण

1. पुरातात्विक स्रोत (Archaeological Sources)

(I) अभिलेख (Inscription)

अभिलेख सर्वाधिक महत्वपूर्ण साक्ष्य माने जाते हैं। सम्राट अशोक के अभिलेख सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख माने जाते हैं। अशोक के

अधिकांश अभिलेख ब्राह्मी लिपि में, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान से प्राप्त अभिलेख अरमाइक एवं यूनानी लिपि में हैं।

- इन अभिलेखों को 1837 में सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप को पढ़ने में सफलता प्राप्त हुई।
- मस्की, गुर्जरा तथा पानगुडइया के अभिलेख में अशोक के नाम का उल्लेख है। अभिलेखों में अशोक को प्रियदर्शी तथा देवताओं का प्रिय कहा गया है।
- अशोक के सभी अभिलेखों का विषय प्रशासनिक है, परंतु रुम्मिदेई अभिलेख का विषय आर्थिक है।

महत्त्वपूर्ण अभिलेख (Important Inscriptions)

	अभिलेख	वंश	शासक
●	हाथी गुम्फा अभिलेख (तिथि रहित अभिलेख)	खारवेल	कलिंग नरेश
●	जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख	यवन	रुद्रदामन
●	नासिक अभिलेख	सातवाहन	गौतमी बलश्री
●	प्रयाग स्तम्भ लेख	गुप्त	समुद्रगुप्त
●	ऐहोल अभिलेख	चालुक्य	पुल्केशिन-II
●	मन्दसौर अभिलेख	मालवा	यशोवर्मन
●	ग्वालियर अभिलेख	प्रतिहार	भोज
●	भितरी एवं जूनागढ़ अभिलेख	गुप्त	स्कन्दगुप्त
●	देवपाड़ा अभिलेख	सेनवंश	विजयसेन

- प्रशस्ति अभिलेखों में प्रसिद्ध हैं—रुद्रदामन का गिरनार अभिलेख, खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख, समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति, सातवाहन राजा पुलुमावी का नासिक गुफालेख आदि।
- गुप्त शासकों का इतिहास अधिकतर उनके अभिलेखों के आधार पर लिखा गया है।
- यवन राजदूत हेलियोडोरस का बेसनगर से प्राप्त गरुड़ स्तंभ अभिलेख से द्वितीय सदी ई. पूर्व के मध्य भारत में भागवत धर्म के मौजूद होने का प्रमाण मिलता है।
- मध्य प्रदेश के एरण से प्राप्त अभिलेख से गुप्तकाल में सती प्रथा की जानकारी प्राप्त होती है।
- गुप्तकालीन उदयगिरि स्थित वराह की मूर्ति पर हूण शासक तोरमाण का लेख अंकित है।
- सर्वप्रथम 'भारत वर्ष' का उल्लेख कलिंग नरेश खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेखों से प्राप्त होता है।
- सर्वप्रथम दुर्भिक्ष की जानकारी देने वाला अभिलेख सौहगौरा अभिलेख है।
- सर्वप्रथम भारत पर होने वाले हूण आक्रमण की जानकारी स्कदंगुप्त के भीतरी स्तंभ लेख से प्राप्त होती है।
- सती प्रथा का पहला साक्ष्य 510 ई. के एरण अभिलेख (सेनापति भानू गुप्त की पत्नी) से प्राप्त होता है।
- रेशम बुनकर की श्रेणियों की जानकारी मंदसौर अभिलेख से प्राप्त होती है।

(II) विदेशी अभिलेख (Foreign Inscriptions)

विदेशी अभिलेखों में सबसे पुराना अभिलेख 1400 ई.पू. का है तथा एशिया माइनर में 'बोगजकोई' से प्राप्त हुआ है। इसमें वरुण, मित्र, इन्द्र तथा नासत्य देवताओं का नामोल्लेख है।

- पर्सिपोलिस तथा बेहिस्तून अभिलेखों से ज्ञात हुआ है कि ईरानी सम्राट द्वारा प्रथम ने 516 ई.पू. में सिन्धु घाटी के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था।
- मिस्र में तेलुवल अमनों में मिट्टी की तख्तियाँ मिली हैं जिन पर बेबीलोनिया के कुछ शासकों के नाम उत्कीर्ण हैं जो ईरानी एवं भारत के आर्यशासकों के नाम जैसे हैं।

(III) मूर्तिकला (Sculpture)

मौर्यकाल में निर्मित विभिन्न मूर्तियाँ जैसे—ग्वालियर की मणिभद्र की मूर्ति, धौली का हाथी, परखम का यक्ष तथा दीदारगंज की यक्षणी आदि प्रसिद्ध कलात्मक पुरातात्विक साक्ष्य हैं। गंधार कला तथा मथुरा कला के कनिष्क की सिर विहीन मूर्ति से तत्कालीन वस्त्र विन्यास की जानकारी प्राप्त होती है।

(IV) मुद्रायें (Coinage)

सन् 206 ई. से 300 ई. तक का भारतीय इतिहास का ज्ञान मुख्यतया मुद्राओं पर आधारित है प्राचीन भारत में सोना, चाँदी, ताँबा, सीसा तथा पोटीन के बने सिक्के प्रचलित थे।

- यद्यपि भारत में सिक्कों की प्राचीनता का स्तर आठवीं शती ई.पू. तक है, परन्तु नियमित सिक्के छठी सदी ई.पू. से ही प्रचलन में आये।
- प्राचीनतम सिक्कों को 'आहत सिक्के' कहा जाता है। साहित्य में इन्हें 'कर्षापण' कहा गया है। ये अधिकांशतः चाँदी के हैं जिन पर ठप्पा लगाकर विविध आकृतियाँ उकेरी गई हैं।
- हिन्दी–बैक्टिरीयाई शासकों ने सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख अंकित करवाया। लेखों से संबंधित राजा के विषय में महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त होती है।
- सबसे अधिक ताँबे, चाँदी व सोने के सिक्के मोर्योत्तर युग के हैं।
- मुद्राओं की सहायता से संबंधित काल के धार्मिक विश्वास, कला, शासन पद्धति तथा विजय अभियान का ज्ञान प्राप्त होता है।
- कनिष्क की मुद्राओं से उसके बौद्ध धर्म के अनुयायी होने का पता चलता है।
- शक–पहलव युग की मुद्राओं से उनकी शासन पद्धति का ज्ञान होता है।
- स्कन्दगुप्त की मुद्राओं में सम्मिश्रित स्वर्ण मिलता है जिससे

तात्कालिक आंतरिक अशांति तथा कमजोर आर्थिक स्थिति का ज्ञान होता है।

- कुषाणकाल की स्वर्ण मुद्रायें सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण मुद्रायें थीं।
- गुप्तकाल में सर्वाधिक सोने के सिक्के जारी किये गये।

(V) स्मारक एवं भवन (Monuments & Buildings)

तक्षशिला से प्राप्त स्मारकों से कुषाण वंश के शासकों तथा गंधारकालीन कला की जानकारी प्राप्त होती है।

- भारतीय इतिहास से संबंधित कुछ विदेशी स्मारक भी प्रकाश में आये हैं, जैसे—कंबोडिया के अंकोरवाट का मन्दिर, जावा का बोरोबुदूर मन्दिर आदि।

(VI) भूमिदान पत्र (Scrous)

ये प्रायः ताँबे की चादरों पर उत्कीर्ण हैं तथा शासकों अथवा सामंतों द्वारा दिये दान अथवा निर्देश के लेखपत्र हैं। दक्षिण भारत के चोल, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पाण्ड्य तथा पल्लव वंश का इतिहास लिखने में ये उपयोगी हैं।

प्रागैतिहासिक पुरातात्विक साक्ष्य (Prehistoric Archaeological Evidences)

स्थान	प्राप्त साक्ष्य
मेहरगढ़	प्रारंभिक कृषि–कार्य के साक्ष्य
इनाम गाँव	मातृदेवी की लघु मूर्ति, सांड की मृणमूर्ति, हाथी दाँत के मनके
बागोर, आदमगढ़	पशुपालन के प्रथम साक्ष्य
चिरांद	हड्डी के औजार
बुर्जहोम	गर्त आवास
हस्तिनापुर	जंगली गन्ना, चावल, काँच की चूड़ियाँ
जखेड़ा	लोहे का हसिया, कुदाल, ताम्र चूड़ियाँ
कोल्डीहवा	चावल के अवशेष
नेवासा	सूती कपड़े का साक्ष्य
अतरंजीखेड़ा	कपड़े की छपाई के अवशेष

आरंभिक सैंधव सभ्यता के साक्ष्य (Early Indus Civilization Evidence)

स्थान	पुरातात्विक साक्ष्य
कोटदीजी तरकाई किला	नगर के चारों ओर अति विशाल सुरक्षात्मक दीवार के अवशेष, काँसे की चूड़ियाँ, वाणाग्र किलेबंदी के प्रमाण, फसल काटने के पत्थर के औजार, लीवान नामक क्षेत्र में पत्थर के औजार बनाने का कारखाना तथा गेहूँ, जौ, मूँग–मसूर एवं मटर के दाने।
रहमान ढ़ेरी	आयताकार नगर एवं नियोजित ढंग से बने मकान, सड़कें–नालियों के अवशेष, सुरक्षात्मक विशाल दीवार, मुहरें, फिरोजी और नीलम के मनके।
मेहरगढ़	मातृ देवी की मृणमूर्ति, लाजवर्द मणि
मुंडीगाक	धूप मे सुखाई गई मिट्टी की ईंटें, महलनुमा दो विशाल भवन, मातृदेवी की मृणमूर्ति, काँसे की मूठदार कुल्हाड़ियाँ।
अमरी	पत्थर और मिट्टी की ईंटों के मकान, किलेबंद बस्तियाँ, अन्नागार, कुबड़े बैल के चित्र वाले बर्तन, बारहसिंघा के साक्ष्य।
दंब सादात	बड़े–बड़े ईंटों के घर, पक्की मिट्टी की मुहरें, चित्रित बर्तन, ताँबे की वस्तुएँ।
राना घुदंई	चित्रयुक्त बर्तन, कुबड़े बैल, चित्र वाले बर्तन।
बालाकोट	विशाल इमारत के अवशेष, कुबड़े बैल एवं बर्तन पर पीपल के चित्र।

(VII) चित्रकला (Paintings)

- अजन्ता की विश्व प्रसिद्ध चित्रकला का पता 1819 ई. में अंग्रेज सैनिक टुकड़ी को चला।
- मद्रास सेना के मेजर रॉबर्ट गिल को 1844 ई. में चित्रों की नकल का कार्यभार सौंपा गया।
- 1915 ई. में लेड़ी हेरिंघम ने 'अजन्ता फ्रेस्कोज' नामक पुस्तक में अजन्ता के चित्रों को प्रकाशित किया।

2. साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

(I) वैदिक साहित्य (Vedic Literature)

(i) ऋग्वेद (Rigveda)

- ऋग्वेद का पहला और दसवाँ अध्याय परवर्ती काल का माना (उत्तर वैदिक काल) जाता है।
- ऋगवेद की शाखाएँ—1. मांडूक्य, 2. वाण्कल, 3. शाकल तथा 4. अश्वालायन। (केवल शाकल ग्रन्थ ही उपलब्ध है।)
- इसमें दस मंडल (अध्याय) एवं 1028 मंत्र हैं।
- ऋग्वेद देवताओं की प्रार्थना हेतु मंत्रों का संग्रह है।
- ऋग्वेद के ब्राह्मण—1. ऐतरेय, 2.कौशीतकि।
- इसका नौवाँ मंडल सोम से संबंधित है।
- इसके द्वितीय से सप्तम् अध्याय के मंत्र अधिकांशतः ऋषियों के एक ही परिवार द्वारा रचे गये हैं।
- इसके तीन मंत्रों की रचना त्रसदस्यु, अजमीढ एवं पुरूमीढ ने की थी।
- ऐतरेय ब्राह्मण का दूसरा नाम पञ्चिका भी है।
- ऋग्वेद के उपनिषद्—1. ऐतरेय, तथा 2. कौशीतकि।
- ऋग्वेद के आरण्यक—1. ऐतरेय 2. कौशीतकि।
- ऋग्वेद न केवल भारतीय आर्यों की, बल्कि समस्त आर्य जाति की प्राचीनतम रचना है। विद्वानों के अनुसार इसकी रचना आर्यों ने पंजाब में की थी।

- चारों वेदों में सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद में 10 मण्डल, 8 अष्टक, 10,600 मंत्र एवं 1028 सूक्त हैं।
- ऋग्वेद का रचना काल सामान्यतः 1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. के बीच माना जाता है।
- ऋग्वेद का दूसरा एवं सातवाँ मण्डल सर्वाधिक प्राचीन तथा पहला एवं दसवाँ मण्डल सबसे बाद का है।
- ऋग्वेद के नौवें मंडल को सोम मंडल भी कहा जाता है।
- ऋग्वेद की मान्य 5 शाखाएँ हैं—शाकल, आश्वलायन, माण्डूक्य, शंखायन एवं वाष्कल।
- ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरुषसूक्त में सर्वप्रथम वर्ण व्यवस्था का उल्लेख मिलता है।
- प्रसिद्ध गायत्री मंत्र (सावित्री) का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

(ii) सामवेद (Samveda)

- आरण्यक—1. जैमिनीय तथा 2. छान्दोग्य।
- ब्राह्मण—1. जैमिनीय 2. छान्दोग्य, 3. षड्विश तथा 4. पञ्चविश।
- उपनिषद्—1. छान्दोग्य उपनिषद् और 2. केनो उपनिषद् (तलवकार)
- सामवेद के पाठ—1. कौथुम संहिता 2. राणायनीय संहिता, तथा 3. जैमिनीय संहिता।
- इसमें ऋग्वेद के ही अधिकांश मंत्रों के संगीतबद्ध किया सामवेद को भारतीय संगीत का प्राचीनतम स्त्रोत कहा जाता है।
- कुल 1810 छन्द एवं 20 अध्याय (75 छन्दों को छोड़कर शेष ऋग्वेद में उपलब्ध हैं।)

(iii) यजुर्वेद (Yajurveda)

- दो भाग (शाखाएँ)—1. कृष्ण तथा 2. शुक्ल यजुर्वेद।
- कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण—तैत्तिरीय ब्राह्मण।
- शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मण—शतपथ ब्राह्मण।
- आरण्यक—वृहदारण्यक, मैत्रायणी और तैत्तिरीयारण्यक।
- कृष्ण यजुर्वेद के उपनिषद्—1. तैत्तिरीय उपनिषद्, तथा 2. कठोपनिषद्, 3. श्वेताश्वतर उपनिषद्, तथा 4. मैत्रायणी उपनिषद्।
- शुक्ल यजुर्वेद के उपनिषद्—1. वृहदारण्यक उपनिषद् तथा 2. ईश उपनिषद्।
- कृष्ण यजुर्वेद के पाठ—1. कपिलष्ठल, 2. काठक संहिता, 3. कठ संहिता तथा 4. तैत्तिरीय संहिता।
- शुक्ल यजुर्वेद के पाठ—1. मध्यानन्दिन तथा 2. कण्व।
- यजुर्वेद में यज्ञ कर्मकांड की चर्चा है।
- यजुर्वेद पद्य एवं गद्य दोनों में लिखा गया है।
- कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ हैं—तैत्तिरीय, काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी।
- शुक्ल यजुर्वेद की प्रधान शाखाएँ मध्यानन्दिन तथा कण्व हैं।
- शुक्ल यजुर्वेद के संहिताओं के रचयिता वजसनेयी के पुत्र याज्ञवल्क्य हैं, इसलिए इसे वाजसनेयी संहिता भी कहा जाता है। इसमें केवल मंत्रों का समावेश है।

(iv) अथर्ववेद (Atharvaveda)

- ब्राह्मण—गोपथ ब्राह्मण
- आरण्यक—इसका कोई आरण्यक नहीं है।
- उपनिषद्—1. मुण्डकोपनिषद्, 2. प्रश्न उपनिषनद्, तथा 3. माण्डूक्य उपनिषद्।
- अथर्ववेद के पाठ—1. शौनकीय तथा 2. पैप्पलाद।
- इसका दूसरा नाम 'ब्रह्मवेद' भी है।
- इसमें मुख्यतः तंत्र–मंत्र का संकलन है। इसमें आम–जन के लोकप्रिय विश्वासों एवं अंधविश्वासों का वर्णन है।
- अथर्ववेद में सामान्य मनुष्यों के विचारों तथा अंधविश्वासों का विवरण मिलता है, इसमें कुल 20 मण्डल, 731 ऋचाएँ तथा 5987 मंत्र हैं।
- अथर्ववेद में परीक्षित को कुरुओं का राजा कहा गया है।
- अथर्वा ऋषि को अथर्ववेद का दृष्टा माना जाता है।
- अथर्ववेद के अतिरिक्त पूर्व तीन वेदों को वेद त्रयी कहा जाता है।
- अथर्ववेद में आर्य तथा अनार्य संस्कृति के मिलन के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। जैसे—मूलतः अंधविश्वास तथा जादू–टोना आदि में विश्वास नहीं करते थे, किन्तु बाद में (उत्तर वैदिक काल) उन्होंने अनेक अनार्य विश्वासों को अपना लिया।
- अथर्ववेद में कई महाजनपदों का उल्लेख प्राप्त होता है।

(II) ब्राह्मण ग्रंथ (Brahmins)

- इनकी रचना मुख्यतः गद्य में हुई है।
- इनका मुख्य उद्देश्य वेदों और धर्मानुष्ठान की व्याख्या करना है। इसलिए ब्राह्मण ग्रंथों को कर्मकाण्ड प्रधान ग्रन्थ कहा जाता है, अर्थात् ये वेदों के कर्मकाण्डीय भाग हैं।
- ऐतरेय ब्राह्मण में कहा गया है कि कुरु सम्राट् सदैव 64 योद्धाओं से घिरा रहता है जो उसके पुत्र एवं पौत्र हैं।
- शतपथ ब्राह्मण में इस बात का उल्लेख है कि पांचाल नरेश शोण सात्रास्तह द्वारा अश्व मेघ यज्ञ सम्पन्न कराए जाते समय 6033 बख्तर बंद योद्धाओं से रक्षित था। इन बातों से तत्कालीन समाज का पता चलता है।
- इसी तरह शतपथ ब्राह्मण में कृषि सम्बन्धी कर्मकाण्डों का व्यापक विवेचन किया गया है। इसमें 4 से लेकर 24 बैलों से

चलने वाले हलों का उल्लेख है जिससे व्यापक कृषि कार्य का पता चलता है।

- ब्राह्मण ग्रन्थों के विस्तृत अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस युग के महत्वपूर्ण यज्ञों जैसे—अश्व मेघ, वाजपेप तथा राजसूर्य यज्ञ आदि का मूल उद्देश्य कृषि उत्पादन को बढ़ाना था।
- संभवतः इन्हीं कृषि तकनीक के कारण कृषि उपज का अर्धशेष हुआ होगा जिसकी पृष्ठभूमि पर महाजनपदों का क्रमशः उदय होता है।
- राजसूय यज्ञ के दौरान राजा 12 स्त्रियों के घर जाता था।

ब्राह्मण, वेद एवं उपवेद
(Brahmins, Vedas & Upavedas)

वेद	उपवेद	बाह्मण
ऋग्वेद	आयुर्वेद	ऐतरेय, कौशीतकी
यजुर्वेद	धनुर्वेद	तैत्तिरीय, शतपथ
सामवेद	गन्धर्ववेद	पंचविश, षड्विश, जैमनीय, छन्दोग्य
अथर्ववेद	शिल्पवेद	गोपथ

बारह रत्निन्
(Twelve Ratnins)

पुरोहित	:	राजा का प्रमुख परामर्शदाता
सेनानी	:	सेना का प्रमुख
ग्रामीण	:	ग्राम का सैनिक पदाधिकारी
महिषी	:	राजा की पत्नी
सूत	:	राजा का सारथी
क्षत्रि	:	प्रतिहार
संग्रहीत	:	कोषाध्यक्ष
भागदुध	:	कर एकत्र करने वाला अधिकारी
अक्षवाप	:	द्युत अधिकारी या लेखाधिकारी
गोविकृत	:	वन का अधिकारी
पालागल	:	राजा का मित्र

ऋग्वेद में उल्लेखित शब्द
(Rigvedic Vocabulary)

शब्द	उल्लेखित संख्या	शब्द	उल्लेखित संख्या
इन्द्र	250	यव	15
अग्नि	200	ब्राह्मण	14
वरुण	30	क्षत्रिय	9
सोम	114	शूद्र	1
जन	275	गंगा	1
विश	170	यमुना	3
कृषि	24	व्यास	–
गौ	176	सभा	8
मित्र	1	विदथ	122
समिति	9	वैश्य	1
अश्व	215	आर्य	36
सूर्य	10	गण	46

(III) आरण्यक (Aranyakas)

- इनका संबंध रहस्यवाद, ब्रह्मविद्या, यज्ञों की प्रतीकात्मकता, जीवन–मृत्यु एवं आत्मा के विभिन्न पहलुओं से है। चूँकि इनकी रचना जंगलों में एकांत में हुई, इसलिए इनका नाम आरण्यक है।
- ज्यादातर आरण्यक ब्राह्मण ग्रंथों में प्राप्त होते हैं।
- **आरण्यक**—यह ब्राह्मण ग्रंथों का अंतिम भाग है जिसमें दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों का वर्णन है। इनकी रचना वनों में पढ़ाये जाने के निमित्त की गयी।
- प्रमुख आरण्यक हैं—ऐतरेय, शंखायन, तैत्तिरीय, वृहदारण्यक, जैमिनी, छान्दोग्य।

(IV) उपनिषद् (Upanishads)

- इसका अर्थ है—नजदीक बैठना यानी गुरु के निकट बैठ कर जो ज्ञान प्राप्त किया गया।
- इनकी संख्या तो वैसे 108 बतायी जाती है, लेकिन इनमें 13 प्रमुख हैं। उपनिषद् गद्य एवं पद्य दोनों में हैं। इन्हें वेदान्त भी कहा जाता है। ये भारतीय दर्शन के मुख्य आधार हैं।
- अधिकांश उपनिषदों को प्राक्–बौद्ध कालीन माना जाता है।
- इसमें मुख्य रूप से शाश्वत आत्मा, ब्रह्म, आत्मा–परमात्मा के बीच सम्बन्ध तथा विश्व की उत्पत्ति से संबंधित रहस्यवादी सिद्धान्तों का वितरण दिया गया है।
- कुल उपनिषदों की संख्या 108 है।
- 'सत्यमेव जयते' मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है।
- मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिमूर्ति और चार्तुआश्रम सिद्धान्त का उल्लेख है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में याज्ञवल्क्य तथ्य गार्गी का संवाद संकलित है।
- कठोपनिषद् में यम तथा नचिकेता का संवाद उल्लेखित है।

(V) वेदांग (Vedang)

- वेदों का सही अर्थ समझने के लिए वेदांगों की रचना हुई।
- 'मुण्डकोपनिषद्' के अनुसार वेदाङ्ग 6 हैं—

(1) शिक्षा (2) कल्प
(3) व्याकरण (4) निरुक्त
(5) छन्द (6) ज्योतिष

- उपनिषद् एक व्यक्ति और एक काल की रचना नहीं है।
- गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी महिलाओं ने उपनिषदों के निर्माण में योगदान दिया।

ऐसे सूत्र जिनमें विधि नियम का प्रतिपादन किया गया है, 'कल्प सूत्र' कहलाते हैं।

कल्पसूत्र के चार भाग होते हैं।

कल्पसूत्र

(1) श्रौतसूत्र, (2) गृहसूत्र, (3) धर्मसूत्र, (4) शुल्बसूत्र।

श्रौत सूत्र के उपविभाग

(1) आपस्तम्ब, (2) अश्वायायन, (3) कात्यायन, (4) जैमिनी, (5) द्राह्यायन, (6) बौधायन, (7) मानव, (8) लाट्यायन, (9) वैतान, (10) सांख्यायन, (11) हिरण्यकेशी।

गृहसूत्र के उपविभाग

(1) कौशिक, (2) खादिर, (3) गोमिल, (4) द्राह्यायन, (5) पास्कर, (6) भारद्वाज, (7) मानव, (8) सांख्यायन।

धर्मसूत्र के उपविभाग

(1) गौतम, (2) विशिष्ट, (3) विष्णु, (4) हरित।

(VI) स्मृतियाँ (Smriti)

- सबसे प्राचीन मनु स्मृति है।
- इसका रचना काल ई. पू. 200 से 200 ई. के बीच माना जाता है, याज्ञवल्क्य स्मृति (100 ई. से 300 ई.) भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।
- नारद (300 ई. से 400 ई.) और पराशर (300 ई. से 500 ई.) की स्मृतियों से गुप्तकाल के सामाजिक व धार्मिक जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा है।
- बृहस्पति (300 ई. से 400 ई.) कात्यायन (400-600 ई.) की स्मृतियाँ भी गुप्तकाल की कृति हैं।

नदियों के प्राचीन एवं नवीन नाम
(Old & New Names of Rivers)

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
वितस्ता	झेलम
असिक्नी	चिनाब
विपासा	व्यास
परुष्णी	रावी
शतुद्रि	सतलज
कुभा	काबुल
क्रुमु	कुर्रम
गोमती	गोमल
दृषद्वती	घग्घर

राजाओं की उपाधियाँ (Titles of Kings)

- **सम्राट**—पूर्व दिशा के राजा
- **भोज**—दक्षिण दिशा के राजा
- **विराट**—उत्तर दिशा के राजा
- **राजन**—मध्य देश के राजा
- **एकराट**—जो राजा चारों दिशाओं अथवा क्षेत्र के शासक को जीत लेते थे।
- **स्वराट**—पश्चिम दिशा के राजा
- **राजा**—राजसूय यज्ञ करने वाले की उपाधि।
- **सम्राट**—बाजपेय यज्ञ करने वाले की उपाधि।

वेदांग एवं उनकी विशेषताएँ
(Vedang & Their Characteristics)

वेदांग	विशेषता
छन्द	वेद के पैर
कल्प	वेद के हाथ
ज्योतिष	वेद की आँखें
निरुक्त	वेद के कान वेद की नाक
व्याकरण	वेद का मुख

(VII) पुराण साहित्य (Puranas)

- पुराण साहित्य का शाब्दिक अर्थ प्राचीन है।
- इसमें प्राचीन भारत के धर्म, इतिहास, आख्यान, विज्ञान आदि का वर्णन है।
- मारकण्डेय, ब्रह्माण्ड, वायु, विष्णु भागवत और मत्स्य पुराण प्राचीन पुराण है।
- मत्स्य, वायु और विष्णु पुराणों में प्राचीन राजवंशों का वर्णन है।
- पुराणों की संख्या 18 है।
- पुराणों के संकलनकर्ता लोमहर्ष अथवा उनके पुत्र उग्रस्त्रवा माने जाते हैं।

  पुराणों के पाँच तत्व हैं—

  ❖ सृष्टि, ❖ प्रतिसर्ग, ❖ मन्वन्तर, ❖ दैववंश तथा ❖ राजवंशों का क्रमिक इतिहास।
- मत्स्य पुराण में सातवाहन वंश के विषय में जानकारी मिलती है तथा मत्स्य पुराण सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रामाणिक पुराण है।
- विष्णु पुराण से मौर्य वंश एवं गुप्त वंश की जानकारी प्राप्त होती है।
- पुराणों को अन्तिम स्वरूप गुप्तकाल में दिया गया।
- पुराणों के अध्ययन से प्राचीन भारत के इतिहास की अच्छी जानकारी प्राप्त होती है।
- भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे अच्छा क्रमबद्ध विवरण पुराणों में मिलता है। इसके रचयिता लोमहर्ष अथवा इनके पुत्र उग्रस्त्रवा जाने जाते हैं। 18 में से केवल पाँच मत्स्य, वायु,

विष्णु, ब्राह्मण एवं भागवत में ही राजाओं की वंशावली पायी जाती है।

(VIII) महाकाव्य (Mahakavyas)

- **रामायण (Ramayana)**—यह आदि काव्य है जिसकी रचना दूसरी शताब्दी के लगभग संस्कृत भाषा में वाल्मीकि द्वारा की गई थी। प्रारम्भ में इसमें 6000 श्लोक थे जो कालांतर में 24,000 हो गये। इसे चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता भी कहा जाता है।
- **महाभारत (Mahabharata)**—इस महाकाव्य की रचना चौथी शताब्दी के लगभग महर्षि व्यास द्वारा की गई थी। प्रारम्भ में इसमें 8,800 श्लोक थे जिसे जयसंहिता कहा जाता था, तत्पश्चात् इसमें श्लोकों की संख्या 24,000 हो गई और इसे भारत कहा जाने लगा। कालांतर में इसमें श्लोकों की संख्या एक लाख हो जाने पर महाभारत या शतसाहस्त्री संहिता कहा जाने लगा।
- महाभारत का प्रारम्भिक उल्लेख आश्वलायन गृहसूत्र में मिलता है।
- **सूत्र**—इस साहित्य की रचना ई. पूर्व छठी शताब्दी के आस–पास की गई थी। सूत्र ग्रन्थों को कल्प भी कहा जाता है।
- **कल्प सूत्र**—ऐसे सूत्र जिनमें नियमों एवं विधि का प्रतिपादन किया जाता है, कल्पसूत्र कहलाते हैं।
- **षड्दर्शन**—उपनिषदों के दर्शन को भारतीय ऋषियों ने छः भागों में विभाजित किया है जिसे षड्दर्शन कहा जाता है। इसमें आत्मा, परमात्मा, जीवन और मृत्यु से सम्बन्धित दार्शनिकता का वर्णन है।
- **स्मृतियाँ**—वेदांग और सूत्रों के बाद स्मृतियों का उदय हुआ। इसे धर्मशास्त्र भी कहा जाता है।
- सबसे प्राचीन स्मृति मनुस्मृति है।
- मनुस्मृति के भाष्यकार क्रमशः हैं—मेघातिथि, भारुचि, कुल्लूक भट्ट तथा गोविन्द राय।
- याज्ञवल्क्य स्मृति के भाष्यकार क्रमशः हैं—अपरार्क, विश्वरूप एवं विज्ञानेश्वर।

स्मृतियाँ एवं उनके वर्ष
(Smriti & Years)

स्मृतियाँ	वर्ष
मनुस्मृति	200-200 ई. पू.
याज्ञवल्क्य स्मृति	100-300 ई. पू.
नारद स्मृति	300-400 ई. पू.
पराशर स्मृति	300-500 ई. पू.
बृहस्पति स्मृति	300-500 ई. पू.
कात्यायन स्मृति	300-600 ई. पू.

प्राचीन दर्शन
(Ancient Darshans/Philosophy)

दर्शन	प्रवर्तक	सम्बन्धित ग्रन्थ
सांख्य	कपिल	सांख्यसूत्र
न्याय	गौतम	न्याय सूत्र
वैशेषिक	कणाद मुनि	वैशेषिक सूत्र
योग	पतंजलि	योग सूत्र
पूर्व मीमांसा	जैमिनी	मीमांसा सूत्र
उत्तर मीमांसा	बादरायण	ब्रह्म सूत्र

(IX) अन्य साहित्य (Other Literature)

- जातक ग्रन्थों में बुद्ध की पूर्वजन्म की कहानी वर्णित है। हीनयान का प्रमुख ग्रन्थ 'कथावस्तु' है जिसमें महात्मा बुद्ध का जीवन चरित्र अनेक कथानकों के साथ वर्णित है।
- बौद्ध 'ग्रन्थ अंगुन्तर' निकाय तथा जैन ग्रन्थ 'भगवती सूत्र' से 16 महाजनपदों की सटीक जानकारी प्राप्त होती है।
- जैन साहित्य को आगम कहा जाता है। जैन धर्म का प्रारम्भिक इतिहास 'कल्पसूत्र' से ज्ञात होता है। जैन ग्रन्थ भगवती सूत्र में महावीर के जीवन कृत्यों तथा अन्य समकालिकों के साथ उनके सम्बन्धों का विवरण मिलता है।
- अर्थशास्त्र के लेखक चाणक्य (कौटिल्य या विष्णुगुप्त) हैं। यह 15 अधिकरणों एवं 180 प्रकरणों में विभाजित है। इससे मौर्य कालीन इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।
- संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं को क्रमबद्ध लिखने का सर्वप्रथम प्रयास कल्हण के द्वारा किया गया। कल्हण द्वारा रचित पुस्तक राजतरंगिणी है जिसका सम्बन्ध कश्मीर के इतिहास से है।
- 'अष्टाध्यायी' (संस्कृत भाषा व्याकरण की प्रथम पुस्तक) के लेखक पाणिनी हैं।
- इससे मौर्य के पहले का इतिहास तथा मौर्ययुगीन राजनीतिक अवस्था की जानकारी प्राप्त होती है।
- कात्यायन की गार्गी संहिता एक ज्योतिष ग्रन्थ है फिर भी इसमें भारत पर होने वाले यवन आक्रमण का उल्लेख मिलता है।
- पतञ्जलि पुष्यमित्र शुंग के पुरोहित थे, इनके महाभाष्य से शुंगों के इतिहास का पता चलता है।
- ऐतिहासिक जीवनियों में अश्वघोष के बुद्धचरित, बाणभट्ट का हर्षचरित, वाक्पति का गौड़वहो, विल्हण का विक्रमांकदेवचरित, पद्मगुप्त का नवसाहशांकचरित, जयानक कृत पृथ्वीराज विजय इत्यादि उल्लेखनीय हैं।
- विष्णु शर्मा कृत 'पंचतन्तु' प्राचीन काल के परिवेश को जानने के लिए एवं अच्छा ग्रन्थ है जिसमें विभिन्न लघु कहानियों के माध्यम से तथा नीति युक्त श्लोकों द्वारा एक राजा के उद्दण्ड राजकुमारों को विष्णु शर्मा ने शिक्षा प्रदान की है। ये कहानियाँ आज भी बहुत लोकप्रिय हैं।

- 'मुद्रा राक्षस' (विशाखदत्त) में मौर्य वंश की जानकारी प्राप्त होती है। विशाखादत्त ने चन्द्रगुप्त मौर्य को वृषल कहा है।

(X) संगम साहित्य

- संगम कालीन ग्रन्थ भी प्राचीन इतिहास की जानकारी के लिए अच्छे स्रोत हैं।
- 'संगम साहित्य' पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में विकसित और पल्लवित हुआ।
- इन ग्रन्थों का संकलन ईसा की चार आरम्भिक शताब्दियों में हुआ। यद्यपि ऐसा माना जाता है कि इनका अन्तिम रूप से संकलन सम्भवतः छठवीं सदी में किया गया है।
- संगम साहित्य के पद 30,000 पंक्तियों में मिलते हैं, जो आठ 'एट्टन्तों' के अर्थात् संकलनों में विभक्त हैं।
- इन संकलनों में अनेक कवियों के पद संकलित हैं। इनमें बहुत से नायकों और नायिकाओं का गुणगान किया गया है।
- इनकी तुलना होमर–युग के वीरगाथा काव्यों से की जा सकती है, क्योंकि इनमें भी यहाँ तथा वीरों का ओजस्वी वर्णन किया गया है।
- संगम ग्रन्थों में अनेक नगरों का वर्णन किया गया है जिसमें कावेरीपट्टनम के पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- इन ग्रन्थों में यह भी बताया गया है कि यवन लोग अपने–अपने पोतों पर आते और सोने के बदले गोल मिर्च खरीदते थे। साथ ही स्थानीय लोगों को सुरा और दासियाँ उपलब्ध कराते थे।

संगमों का विवरण (Details of Sangams)

प्रथम संगम	
अध्यक्ष	अगस्त ऋषि (आचार्य अगत्तियनार)
स्थल	मदुरा
संरक्षक शाक	पांडेय राजा
विद्वान	कुन्नमेरिद, कुरुगवल, मुदिनागरायर आदि
महत्वपूर्ण ग्रन्थ	परिपाडल–मुदनारै, उदुकुरूक, अकत्तियक आदि।
सदस्यों की संख्या	549

- प्रथम संगम का कोई भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।

द्वितीय संगम	
अध्यक्ष	अगस्त एवं तोल्काप्यिर
स्थल	कपाटपुरम (अलवै)
संरक्षक शासक	पांड्य राजा
विद्वान	कुरूगोलिमोसी, इरून्दयूर, वेल्लूर काप्पियन् आदि।
महत्वपूर्ण ग्रंथ	तोल्काप्पम, भूतपुरानम, अगत्तियम, मापुरानम आदि।
सदस्यों की संख्या	49

- द्वितीय संगम काल का केवल एकमात्र ग्रन्थ 'तोल्काप्पियम' ही उपलब्ध है।

तृतीय संगम	
अध्यक्ष	नक्कीरर
स्थल	उत्तरी मदुरा
संरक्षक शासक	पांड्य
विद्वान	कपिलर, इरेयनार, सत्तलै सत्तनार, परनर आदि।
महत्वपूर्ण ग्रंथ	पदित्रपत्रु, परिपादल, नेडुण्थोकै, नत्रिनै, पेरिसै सित्रिसै आदि।
सदस्यों की संख्या	49

- तृतीय संगम के सभी ग्रन्थ उपलब्ध हैं।
- **एतुतोकै**–इसे अष्टपदावली भी कहते हैं। इसमें निम्न 8 ग्रन्थ हैं–
  - कुरुण्थो–यह प्रेम प्रधान 400 गीतों का संकलन है।
  - नाण्णिनै
  - पदितुप्पत्तु–यह 8 कविताओं का संग्रह है और इसमें चेर शासकों का वर्णन है।
  - एठकुरूनूर–लेखक–किलार। यह प्रेम प्रधान 500 लघु गीतों का संग्रह है।
  - कलिथौकै
  - परिपादल–इस ग्रन्थ में देवताओं का वर्णन है।
  - पुरनानूरू–इसमें राजाओं का वर्णन है (वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन)।
  - अहनानूर–लेखक–रुद्र शर्मा। इसमें प्रेमपूर्ण 400 कविताएँ हैं।
- **पत्तुप्पातु**–यह ग्रन्थ दस गीतों का संग्रह है।
  - पेरूम्पानात्रुत्पदै–लेखक–रुद्रन कन्ननार। इस ग्रन्थ से कांची के राजा 'तोण्डैमान् इलण्डिरै की जानकारी प्राप्त होती है।
  - नेडुल्वादै–लेखक–नक्कीरर। इसमें विरह गीतों का वर्णन है।
  - तिरुमुरूकात्रुप्पदै–लेखक–नक्कीरर। इसमें मुरुगन देवता का वर्णन है।
  - मुल्लैप्पात्तु–लेखक–नप्पुथनार। इसमें पति–विरह का वर्णन है।
  - सिरुपानात्रप्पदै–लेखक–नश्थयनार। इसमें चेर, चोल और पांड्य शासकों और उस काल की सामाजिक स्थिति का वर्णन है।

- मदुरै कांचि—लेखक—मागुदि मरूथनार। इसमें पाड्य राजा तैलयालगानम् नेडुन्जेलियन का वर्णन मिलता है।
- पत्तिनप्पालै—लेखक—रुद्रन कन्ननार। इसमें पांड्य राजा करिकाल और उसकी राजधानी कावेरीपट्टनम का वर्णन है। ये प्रेमप्रधान ग्रन्थ है।
- पोरूनरात्रत्पदै—लेखक—कन्नियार। इसमें चोल राजा करिकाल का वर्णन है।
- मलैपदुकदाम—लेखक—कौशिकनार। इसमें नृत्यों का वर्णन है। इसमें प्रकृति चित्रण भी किया गया है।
- कुरिन्चित्वात्तु—लेखक कपिलर। इसमें ग्रामीण जीवन व्यवस्था का चित्रण है।

- पदिनेकिकण्उक्कु इसमें 18 लघु गीतों का संग्रह है। इन गीतों में नीति और उपदेशपरक काव्य वर्णन है।

3. विदेशी यात्रियों के विवरण (Details of Foreign Travellers)

- विदेशी यात्रियों के विवरण साहित्यिक साक्ष्य के अन्तर्गत आते हैं। इनके विवरण से तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक अवस्था का पता चलता है।
- विदेशियों के विवरण को तीन भागों में बाँटा जाता है—(I) यूनान और रोम के लेखकों का विवरण, (II) चीनी यात्रियों के वृत्तान्त एवं (III) अरब यात्रियों के वृतान्त।

(I) यूनान एवं रोम के लेखकों का विवरण (Greek & Roman Travellers)

- **हेरोडोट्स**—इसे इतिहास का पिता कहा जाता है। इसने अपनी पुस्तक **हिस्टोरिका** में पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व के भारत फारस के सम्बन्ध का वर्णन किया है।
- **टेसियस**—यह ईरान का राजवैद्य था। इसने भारत के विषय में समस्त जानकारी ईरानी अधिकारियों द्वारा प्राप्त की थी।
- सिकन्दर के साथ भारत आने वाले लेखकों में **नियार्कस, आनेसिक्रिट्स** एवं **अरिस्टोबुलस** के विवरण अधिक विश्वसनीय एवं प्रामाणिक हैं।
- सिकन्दर के पश्चात् भारत आने वाले तीन राजदूतों—मेगस्थनीज, डाइमेकस तथा डायोनिसियस थे जो यूनानी शासकों द्वारा पाटलिपुत्र के मौर्य दरबार में भेजे गये थे।
- **मेगस्थनीज**—यह सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था जो चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था। इसने 'इण्डिका' नामक अपने ग्रन्थ में मौर्ययुगीन समाज एवं संस्कृति के विषय में लिखा है।
- **डाइमेकस**—यह सीरियन नरेश एन्टियोकस प्रथम का राजदूत था जो बिन्दुसार के दरबार में आया था।
- **डायोनिसियस**—यह मिस्र नरेश टॉलमी द्वितीय फिलेडेल्फस का राजदूत था जो अशोक के दरबार में आया था।
- **पेरीप्लस ऑफ द इरिथियन सी**—इसकी रचना एक अज्ञात लेखक द्वारा 80 ई. के लगभग की गई थी, जो हिन्द महासागर की यात्रा पर आया था। इसमें व्यापारिक वस्तुओं तथा बंदरगाहों का विवरण दिया गया है।
- **टॉलमी**—इसने दूसरी शताब्दी ई. के लगभग (150 ई.) 'भूगोल' नामक ग्रन्थ की रचना की थी।
- **प्लिनी**—इसमें 'नैचुरल हिस्टोरिका' नामक ग्रन्थ की रचना प्रथम शताब्दी ईसवी के लगभग की थी। इसमें भारतीय पशुओं, पेड़—पौधे, खनिज पदार्थों इत्यादि का विवरण दिया गया है।

(II) चीनी यात्रियों का वृत्तांत (Chinese Travellers)

- चीनी यात्री फाह्यान, सुंगयुन, ह्वेनसांग तथा इत्सिंग के विवरण भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में विशेष उपयोगी रहे हैं।
- ये सारे बौद्ध मतानुयायी थे जो बौद्ध तीर्थस्थानों की यात्रा तथा बौद्ध धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये भारत आये थे। इन्होंने भारत का उल्लेख 'यिन—तु' नाम से किया है।
- **फाह्यान**—यह गुप्त नरेश चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (375-415 ई.) के दरबार में भारत आया था। इसने अपने विवरण में मध्यदेश के समाज एवं संस्कृति का वर्णन किया है जिसमें मध्यदेश की जनता को 'सुखी एवं समृद्ध' बताया है।
- **सुगयुन**— यह 518 ई. में भारत आया था। इसने अपने तीन वर्षों की यात्रा में बौद्ध ग्रन्थों की प्रतियाँ एकत्रित कीं।
- **ह्वेनसांग**—इसे युवानच्यांग के नाम से भी जाना जाता है। यह हर्षवर्द्धन के समय 629 ई. के लगभग भारत आया था जो यहाँ 16 वर्षों तक रहा।
- ह्वेनसांग का यात्रा वृत्तांत 'सि—यू—की' नाम से जाना जाता है जिसमें 138 देशों का विवरण मिलता है।
- ह्वेनसांग की जीवनी ह्वीली ने लिखी थी। यह ह्वेनसांग का मित्र था।
- **इत्सिंग**—यह सातवीं शताब्दी के अन्त में भारत आया था। इसने अपने विवरण में नालन्दा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा अपने समय की भारतीय दशाओं का वर्णन किया है।
- **मात्वान लिन्**—इसके विवरण से हर्ष के पूर्वी अभियान की जानकारी प्राप्त होती है।
- **चाऊ—जू—कुआ**—यह अपने विवरण में चोल इतिहास के विषय में जानकारी देता है।
- **लामा तारानाथ**—इसने कंग्यूर—तंग्यूर एवं बौद्ध धर्म के इतिहास नामक पुस्तक लिखी।

(III) अरब यात्रियों के वृत्तांत (Arab Travellers)

- अरबी लेखकों में अलबरूनी, अल बिला दुरी, सुलेमान, अल मसूदी, हसन निजाम, फरिश्ता, निजामुद्दीन इत्यादि मुसलमान लेखक हैं जिनकी कृतियों से भारतीय इतिहास विषयक महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- **अलबरूनी**–इसका पूरा नाम अबूरेहान मुहम्मद इब्द अहमद अलबरूनी था। इसका जन्म 973 ई. में ख्वारिज्म (खीवा) में हुआ था।

NCERT CORNER

1. हम अतीत के बारे में क्या जान सकते हैं ? (What We can know about Past?)

हम अपने अतीत के बारे में कई बातें जान सकते हैं जैसे–

- लोग क्या खाते थे, किस तरह के कपड़े पहनते थे, किस तरह के घर में रहते थे।
- हम शिकारियों, चरवाहों, किसानों, शासकों, व्यापारियों, पुजारियों, शिल्पकारों, कलाकारों, संगीतकारों और वैज्ञानिकों के जीवन के बारे में पता लगा सकते हैं।
- हम बच्चों द्वारा खेले जाने वाले खेलों, उनके द्वारा सुनी गई कहानियों, उनके द्वारा देखे गए नाटकों, उनके द्वारा गाए गए गीतों के बारे में भी पता लगा सकते हैं।

(I) लोग कहाँ रहते थे? (Where did people live?)

- लोग कई लाख वर्षों से नदियों के किनारे रहते आये हैं। यहां रहने वाले शुरुआती लोगों में से कुछ कुशल संग्राहक थे, यानी वे लोग जो अपना भोजन इकट्ठा करते थे।
- वे अपने भोजन के लिए जड़, फल और अन्य वनोपज एकत्र करते थे। कभी–कभी वे जानवरों का भी शिकार करते थे।
- सुलेमान और किरथर पहाड़ियों में कुछ ऐसे स्थान है जहाँ लगभग 8000 साल पहले महिलाओं और पुरुषों ने सबसे पहले गेहूँ और जौ जैसी फसलें उगाना शुरू किया था।
- लोग भेड़, बकरी और मवेशियों जैसे जानवरों की भी देखभाल करने लगे और गाँवों में रहने लगे।
- चावल सबसे पहले विंध्य के उत्तर में लगाया गया था।
- लगभग 2500 साल पहले शहर, गंगा और उसकी सहायक नदियों के किनारे और समुद्री तटों पर विकसित हुए थे।
- प्राचीन काल में, गंगा के दक्षिण में गंगा और उसकी सहायक नदियों के साथ का क्षेत्र मगध के नाम से जाना जाता था जो अब बिहार राज्य में स्थित है।

(II) लोगों की आवाजाही (Movement of People)

- पुरुषों और महिलाओं ने आजीविका की तलाश में और बाढ़ या सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए यात्रा की।
- लोगों की इन यात्राओं ने हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को समृद्ध किया।
- लोगों ने कई सैकड़ों वर्षों में पत्थर तराशने, संगीत बनाने और यहां तक कि खाना पकाने के नए तरीकों को साझा किया है।

(III) भारत के विभिन्न नाम (Different names o f India)

हमारे देश को भारत और इंडिया दोनों शब्दों से जाना जाता है।

- इंडिया शब्द सिंधु से आया है, जिसे संस्कृत में सिंधु कहा जाता है। लगभग 2500 साल पहले उत्तर–पश्चिम से आए ईरानियों और यूनानियों ने इसे हिंदो या इंडोस कहा, और नदी के पूर्व की भूमि को इंडिया कहा गया।
- भरत नाम उन लोगों के समूह के लिए इस्तेमाल किया गया था जो उत्तर–पश्चिम में रहते थे, और जिनका उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है, जो संस्कृत की सबसे प्रारंभिक रचना है (लगभग 3500 साल पहले)। बाद में इसका इस्तेमाल देश के लिए किया गया।

2. पांडुलिपि (Manuscripts)

- एक तरीका जिसके द्वारा हम अपने अतीत के बारे में पता लगा सकते हैं, वह है उन किताबों को पढ़ना जो बहुत पहले लिखी गई थीं।
- इन पुस्तकों को पांडुलिपि कहा जाता है क्योंकि ये हाथ से लिखी गई थीं।
- ये ताड़ के पत्तों पर या हिमालय में उगने वाले बर्च नामक पेड़ की विशेष रूप से तैयार छाल पर लिखे गए थे।
- ये पुस्तकें सभी प्रकार के विषयों से संबंधित हैं: धार्मिक विश्वास और प्रथाएं, राजाओं का जीवन, चिकित्सा और विज्ञान। इसके अलावा, महाकाव्य, कविता, नाटक भी शामिल थे।
- इनमें से कई संस्कृत में लिखे गए थे, अन्य प्राकृत (सामान्य लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषाएं) और तमिल में थे।

3. शिलालेख (Inscriptions)

- शिलालेख अपेक्षाकृत कठोर सतहों जैसे पत्थर या धातु पर लिखे गए लेख हैं।
- अतीत में, जब राजा चाहते थे कि उनके आदेश अंकित हों ताकि लोग उन्हें देख सकें, पढ़ सकें और उनका पालन कर सकें, उन्होंने इस उद्देश्य के लिए शिलालेखों का इस्तेमाल किया।
- अन्य प्रकार के शिलालेख भी हैं, जहां पुरुषों और महिलाओं (राजाओं और रानियों सहित) ने जो कुछ किया, उसे दर्ज किया।

अशोक के शिलालेख
(Ashoka Inscription)

लगभग 2250 साल पहले का एक शिलालेख, वर्तमान अफगानिस्तान के कंधार में पाया गया था। यह अशोक नामक शासक के आदेश पर अंकित किया गया था। यह शिलालेख दो अलग–अलग लिपियो और भाषाओं, ग्रीक (शीर्ष) और अरामी (नीचे) में अंकित किया गया था, जो इस क्षेत्र में उपयोग किए गए थे।

4. पुरातात्विक साक्ष्य
(Archaelogical Evidence)

- इतिहासकार पांडुलिपियों, शिलालेखों और पुरातत्व से मिली जानकारी को संदर्भित करने के लिए स्रोत शब्द का उपयोग करते हैं।
- पुरातत्वविद् वह व्यक्ति होता है जो पत्थर और ईंट से बनी इमारतों के अवशेषों, पेंटिंग और मूर्तिकला का अध्ययन करता है।
- ये उपकरण, हथियार, बर्तन, धूपदान, गहने और सिक्के खोजने के लिए खोज और खुदाई भी करते हैं।
- ये यह पता लगाने के लिए जानवरों, पक्षियों और मछलियों की हड्डियों की भी तलाश करते हैं कि लोग अतीत में क्या खाते थे।

5. अतीत के विभिन्न अर्थ
(Different Meaning of Past)

- चरवाहों या किसानों का जीवन राजाओं और रानियों के जीवन से भिन्न था, व्यापारियों का जीवन शिल्पकारों के जीवन से भिन्न था। यह आज भी सच है क्योंकि देश के विभिन्न हिस्सों में लोग विभिन्न प्रथाओं और रीति–रिवाजों का पालन करते हैं।
- पुरातत्व ने हमें अतीत में सामान्य लोगों के बारे में अधिक जानने में मदद नहीं की क्योंकि उन्होंने जो किया उसका रिकॉर्ड नहीं रखा। जबकि, राजा अपनी जीत और उनके द्वारा लड़े गए युद्धों का रिकॉर्ड रखते थे।

6. तिथियों का मतलब
(Meaning of Date)

- वर्षों की गणना ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह के जन्म की तारीख से की जाती है।
- मसीह के जन्म से पहले की सभी तिथियों को पीछे की ओर गिना जाता है और आमतौर पर BC (Before Christ) अक्षर जोड़े जाते हैं।

अंग्रेजी में बी.सी. (हिन्दी में ई.पू.) का तात्पर्य 'बिफोर क्राइस्ट' (ईसा पूर्व) होता है।

कभी–कभी तिथियों से पहले ए.डी. (हिन्दी में ई.) लिखा जाता है। यह 'एनो डॉमिनी' नामक दो लैटिन शब्दों से बना है तथा इसका तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के वर्ष से है।

कभी–कभी ए.डी. की जगह सी.ई. तथा बी.सी. की जगह बी.सी.ई. का प्रयोग होता है। सी.ई. अक्षरों का प्रयोग 'कॉमन ऐरा' तथा बी.सी.ई. का 'बिफोर कॉमन ऐरा' के लिए होता है। हम इन शब्दों का प्रयोग इसलिए करते हैं क्योंकि विश्व के अधिकांश देशों में अब इस कैलेंडर का प्रयोग सामान्य हो गया। भारत में तिथियों के इस रूप का प्रयोग लगभग दो सौ वर्ष पूर्व आरंभ हुआ था।

कभी–कभी अंग्रेजी के बी.पी. अक्षरों का प्रयोग होता है जिसका तात्पर्य 'बिफोर प्रेजेन्ट' (वर्तमान से पहले) है।

CTET (2011-2021) के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किसके लेखन को प्राथमिक स्रोत के रूप में माना नहीं जा सकता है ?

(A) अबुल फजल

(B) राससुंदरी देवी

(C) जियाउद्दीन बरनी

(D) मुज्जफर आलम

CTET 07-07-2019 (VI-VIII)

1. (D) मुजफ्फर आलम के लेखन को प्राथमिक स्रोत के रूप में नहीं माना जा सकता।

2. यदि आपको प्राचीन भारतीय इतिहास पढ़ाना प्रारम्भ करना है तो निम्नलिखित स्रोतों में से किस स्रोत को प्रयुक्त करना गलत होगा ?

(A) लघु चित्रकारी (B) शिलालेख

(C) हस्तलिपियाँ (D) गुफा चित्रकारी

CTET 07-07-2019 (VI-VIII)

2. (A) यदि आपको प्राचीन भारतीय इतिहास पढ़ाना है तो शिलालेख, हस्तलिपियाँ और गुफा चित्रकारी को प्रयुक्त करना उचित होगा।

3. नीचे दो कथन उन्नीसवीं शताब्दी में नई लोकप्रिय भारतीय कला के संदर्भ में हैं।

कथन (A) : कई चित्रों में अपने आस–पास के बदलावों का उपहास किया गया, अंग्रेजी भाषी लोगों के नए शौकों का मजाक तथा औरतों को घर से बाहर न निकलने की सलाह दी गई।

कथन (B) : राष्ट्रवादी विचारों को अभिव्यक्त करने और लोगों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ उद्वेलित करने के लिए छवियों का इस्तेमाल किया जाता था।

(A) (A) और (B) दोनों सही हैं, किन्तु (A) की सही व्याख्या (B) नहीं है

(B) (A) सही है, किन्तु (B) गलत है

(C) (A) गलत है, किन्तु (B) सही है

(D) (A) और (B) दोनों सही हैं तथा (A) की सही व्याख्या (B) है

CTET 08-12-2019 (VI-VIII)

3. (A) अंग्रेजी भाषी लोगों के या ब्रिटिश शासन के खिलाफ उद्वेलित करने के लिए छवियों का इस्तेमाल किया जाता था, जबकि अंग्रेजी भाषी लोगों के नए शौकों का मजाक तथा औरतों को घर से बाहर न निकलने जैसा कोई माहौल या संस्कृति थी।

4. भारत में आरंभिक मानवों पर समझ के लिए निम्नलिखित में से किसे एक प्राथमिक स्रोत माना जा सकता है ?

(A) गिरनार का शैल अभिलेख

(B) पादशाहनामा चित्रकला

(C) मध्य प्रदेश की शैल चित्रकला

(D) कांगड़ा शैली की चित्रकला

CTET 08-12-2019 (VI-VIII)

4. (C) मध्य प्रदेश की शैल चित्रकला भारत में आरंभिक मानवों पर समझ के लिए प्राथमिक स्रोत माना जा सकता है। भीमबेटका मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित एक पुरापाषाणिक स्थल है। यह आदिमानवों द्वारा बनाये गये शैल चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

5. जनजातीय लोगों के इतिहास के पुनर्निर्माण में निम्न में से कौन–सा कथन गलत है ?

(A) अधिकांश जनजातीय समूहों ने लिखित दस्तावेज रखा है

(B) जनजातीय लोगों ने समृद्ध रीति–रिवाजों और मौखिक परंपराओं का संरक्षण किया है

(C) जनजातीय समाज अपनी विविध किस्म की जरूरतों के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहा

(D) समकालीन इतिहासकार और मुसाफिरों ने जनजातियों के बारे में बहुत कम जानकारी दी है

CTET 08-12-2019 (VI-VIII)

5. (A) अधिकांश जनजातीय समूहों ने लिखित दस्तावेज रखा है। जनजातीय लोगों के इतिहास के पुनर्निर्माण में यह कथन गलत है।

6. सबसे पुरानी पांडुलिपियाँ .... पर लिखी गई थीं।
(A) कागज (B) लकड़ी
(C) ताड़पत्रों (D) पत्थरों

CTET 09-12-2018 (VI-VIII)

6. (C) सबसे पुरानी पांडुलिपियाँ ताड़पत्रों पर लिखी गयी थीं।

7. गणितज्ञ तथा खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने *आर्यभट्टीयम्* नामक पुस्तक निम्नलिखित भाषाओं में से किसमें लिखी थी?
(A) पाली (B) संस्कृत
(C) प्राकृत (D) हिन्दी

CTET Feb., 2016 (VI-VIII)

7. (B) आर्यभट्ट ने 'आर्यभट्टीयम' एवं 'सूर्यसिद्धान्त' नामक ग्रंथ लिखे। इसी ने सर्वप्रथम बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। आर्यभट्टीयम की रचना संस्कृत में की गई।

8. हैलियोग्राफी सम्बन्धित है–
(A) शासक के आत्मकथा लेखन से
(B) सन्त के जीवनी लेखन से
(C) सन्त के आत्मकथा लेखन से
(D) शासक के जीवनी लेखन से

CTET 22-02-2015 (VI-VIII)

8. (B) हैलियोग्राफी से तात्पर्य किसी सन्त की जीवनी लेखन से है। हैलियोग्राफी, आत्मकथा या इतिहास के उस अपमानजनक सदर्भों के लिये प्रयोग की जाती है जिसके लेखकों के बारे में अनुभव किया है कि वे आलोचनात्मक या अपने विषयों के प्रति आदरणीय है।

9. पाण्डुलिपियों और अभिलेखों पर निम्नलिखित दो कथनों (A) और (B), पर विचार कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए–
(A) पाण्डुलिपियाँ प्रायः ताड़पत्रों अथवा भूर्ज नामक वृक्ष की छाल से विशेष तरीके से तैयार भोजपत्र पर लिखी जाती थीं।
(B) अभिलेख पत्थर तथा धातु जैसी अपेक्षाकृत कठोर सतहों पर उत्कीर्ण किए जाते थे।
(A) (A) गलत है और (B) सही है
(B) (A) और (B) दोनों सही हैं
(C) (A) और (B) दोनों गलत हैं
(D) (A) सही है और (B) गलत है

CTET 22-02-2015 (VI-VIII)

9. (B) पांडुलिपियाँ प्रायः ताड़पत्रों अथवा भूर्जपत्रों पर लिखी जाती हैं। जबकि अभिलेख पत्थर या धातु जैसी अपेक्षाकृत कठोर सतहों पर उत्कीर्ण किये जाते हैं।

10. भारतीय इतिहास को 'प्राचीन', 'मध्य', और 'आधुनिक' कालों में विभाजित करने में समस्याएँ भी हैं। निम्नलिखित में से वह समस्या कौन–सी है?
(A) त्रिविभाजन भारतीय राज्यों की क्रमिक प्रगति को दर्शाता है
(B) तीन काल भारतीय इतिहास को वर्णित करने के लिए अपर्याप्त हैं
(C) यह संकल्पना पश्चिम से ली गई है जहाँ आधुनिक काल विज्ञान, तर्कणा, लोकतंत्र, स्वतंत्रता और समानता से सम्बन्धित है
(D) भारतीय इतिहास में 'प्राचीन काल' और 'मध्यकाल', तथा 'मध्यकाल' और 'आधुनिक काल' में अंतर की स्पष्ट रेखाएँ प्रतीत होती हैं

CTET 29-01-2012 (VI-VIII)

10. (C) "भारतीय इतिहास को प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक कालों में विभाजित करने में भी समस्याएँ हैं" संकल्पना पश्चिम से ली गई हैं क्योंकि वहाँ आधुनिक काल का सम्बन्ध विज्ञान, तर्क, लोकतन्त्र, समानता व स्वतन्त्रता से है।

11. आदिवासी (जनजातीय) लोग अपना पिछला लिखित रिकॉर्ड नहीं रखते हैं। वर्तमान के इतिहासकार आदिवासी इतिहास कैसे लिखते हैं?
(A) प्राकृतिक परंपराओं का प्रयोग करके
(B) आदिवासी पौराणिक–कथाओं का प्रयोग करके
(C) पुरातत्त्वीय स्रोतों का प्रयोग करके
(D) वाचिक परंपराओं का प्रयोग करके

CTET 29-01-2012 (VI-VIII)

11. (D) आधुनिक इतिहासकार आदिवासी (जनजाति) लोगों का इतिहास लिखने के लिये वाचिक परम्परा का प्रयोग करते हैं।

12. ऐतिहासिक स्थल वह है जहाँ–
(A) अतीत के स्मृति शेष/अवशेष मिलते हैं
(B) उत्खनन के क्रियाकलाप होते हैं
(C) इतिहास–प्रिय लोग जुटते हैं
(D) इतिहासकार इतिहास लिखते हैं

CTET 29-01-2012 (VI-VIII)

12. (A) ऐसे स्थान जहाँ अतीत के स्मृति शेष/अवशेष मिलते हैं, ऐतिहासिक स्थल कहलाते हैं। जैसे–हड़प्पा, मोहनजोदड़ो आदि।

13. निम्नलिखित में से कौन–सा कथन 'प्राचीन हस्तलिपि' के संदर्भ में सही ***नहीं*** है?
(A) वे प्रायः ताड़ पत्रों पर लिखी हुई थीं
(B) वे जिस काल को प्रदर्शित करती हैं उस काल का मुख्य स्रोत हैं
(C) वे हस्तलिखित थीं और उसके बाद मुद्रित की गई थीं
(D) कुछ हस्तलिपियाँ पत्थर या धातु पर उकेरी गई थीं

CTET 26-06-2011 (VI-VIII)

13. (B) प्राचीन हस्तशिल्प उस काल का मुख्य स्रोत होती है जिसको प्रदर्शित करती हैं। ज्ञात हो कि हस्तशिल्प में हाथों से कारीगारी या शिल्पकारी की जाती है। यह कार्य कागज, लकड़ी, मिट्टी चट्टान, धातु आदि पर किया जाता है।

14. महापाषाणों के विषय में निम्नलिखित कथनों में से कौन–सा कथन सही है?
(A) इनका उपयोग दफन करने की जगहों को चिह्नित करने के लिए किया जाता था।
(B) ये सभी भूमिगत और दृष्टि से ओझल रूप में पाए गए थे।
(C) ये पत्थर के औजार बनाने के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराते थे।
(D) ये भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिम में संकेन्द्रित थे।

CTET Sept. 2016 (VI-VIII)

14. (A) महापाषाण (Megalith) ऐसे बड़े पत्थर या शिला को कहा जाता है जिसका प्रयोग किसी स्तम्भ, स्मारक या अन्य निर्माण के लिए किया गया हो।

15. बी.सी.ई. का तात्पर्य है–
(A) बिफोर कॉमन एरा
(B) बिफोर सीजर एरा
(C) बिफोर कॅन्टिंपररी एरा
(D) बिफोर क्रिश्चियन एरा

CTET 08-12-2019 (VI-VIII)

15. (A) बी.सी.ई. का पूरा नाम बिफोर कॉमन एरा है। इसे बी.सी. के स्थान पर उपयोग में लाया जाता है। बी.सी. का पूर्ण रूप बिफोर क्राइस्ट है। ग्रेगोरियन कैलेण्डर में ईसवी (ई.) ईसा मसीह के जन्म के बाद के वर्षों को दर्शाता है और ईसा पूर्व (ई.पू.) उनके जन्म से पूर्व के वर्षों को दर्शाता है।

16. 'कॉमन एरा' क्या है?
(A) आदेश जारी करने के लिए सरकार द्वारा स्वीकृत भारतीय 'एरा'
(B) हिंदू 'एरा' और इस्लामिक 'एरा' के सम्मिश्रण से विकसित एक नया 'एरा'

(C) ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन करने का नया 'एरा'

(D) क्रिश्चियन 'एरा' जो अब दुनिया के अधिकांश हिस्सों में स्वीकृत है

CTET 29-01-2012 (VI-VIII)

16. (D) विश्व के अधिकांश हिस्सों में स्वीकृत क्रिश्चियन एरा को ही कॉमन एरा के नाम से जाना जाता है।

17. सन् 2012 निम्नलिखित में से किस प्रकार से भी लिखा जा सकता है?

(A) ई.सी. 2012 (B) ए.डी. 2012

(C) ए.पी. 2012 (D) बी.सी. 2012

CTET 18-11-2012 (VI-VIII)

17. (B) सन् 2012 को ए. डी. 2012 के रूप में भी लिखा जा सकता है। ज्ञात हो कि ए. डी. का पूर्ण रूप एनो डॉमिनी (Anno Domini) होता है।

18. नीचे कुछ स्थानों एवं वर्तमान राज्य के नाम दिए गए हैं जहाँ अनाज और पालतू पशुओं के प्रमाण/साक्ष्य पाए गए हैं—

स्थान का नाम	वर्तमान राज्य
(a) चिरान्द	(e) कश्मीर
(b) कोहदिह्वा	(f) उत्तर प्रदेश
(c) बर्जोहम	(g) आन्ध्र प्रदेश
(d) हालुर	(h) बिहार

उपर्युक्त दो कॉलमों के सही जोड़े हैं—

(A) ah; bf; ce; dg (B) ag; bh; cf; de

(C) ae; bg; ch; df (D) af; be; cg; dh

CTET 16-02-2014 (VI-VIII)

18. (A) सही मिलान निम्नवत् है—

चिरान्द	–	बिहार
कोलदिह्वा	–	उत्तर प्रदेश
बर्जोदृम	–	कश्मीर
हालुर	–	बिहार

19. 'भरत' लोगों का एक समूह था, जिसका उल्लेख 'ऋग्वेद' में मिलता है। वे .... में रहते थे।

(A) दक्षिण भारत

(B) उत्तर भारत

(C) पश्चिम भारत

(D) उत्तर–पश्चिम भारत

CTET 21-09-2014 (VI-VIII)

19. (D) "भरत" लोगों का एक समूह था जिसका उल्लेख "ऋग्वेद" में मिलता है। ये लोग सरस्वती नदी के किनारे उत्तर–पश्चिमी भारत में रहते थे।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. वर्तमान में अंगकोरवाट स्थित है—

(A) कम्पूचिया (कम्बोडिया) में

(B) श्रीलंका में

(C) चीन में

(D) म्यांमार में

2. 'मालतीमाधव' नामक नाटक की रचना किसने की थी?

(A) भास

(B) कालिदास

(C) भवभूति

(D) बाणभट्ट

3. बृहदेश्वर मन्दिर स्थित है—

(A) तन्जौर में (B) ओडिशा में

(C) कालीकट में (D) डक्कन में

4. मार्कोपोलो कौन था?

(A) अन्वेषक

(B) वैज्ञानिक

(C) लेखक

(D) प्रकाशक

5. ह्वेनसांग एक .... यात्री था।

(A) अंग्रेजी (B) रोमन

(C) चीनी (D) पुर्तगाली

उत्तरमाला

1. (A) **2.** (C) **3.** (A) **4.** (A) **5.** (C)

❑❑